शांतिपूर्ण जंगल

जानवरों के प्रति दया

एक भारतीय कहानी

शांतिपूर्ण जंगल

जानवरों के प्रति दया

एक भारतीय कहानी

कोसा एली

चित्र: अन्ना

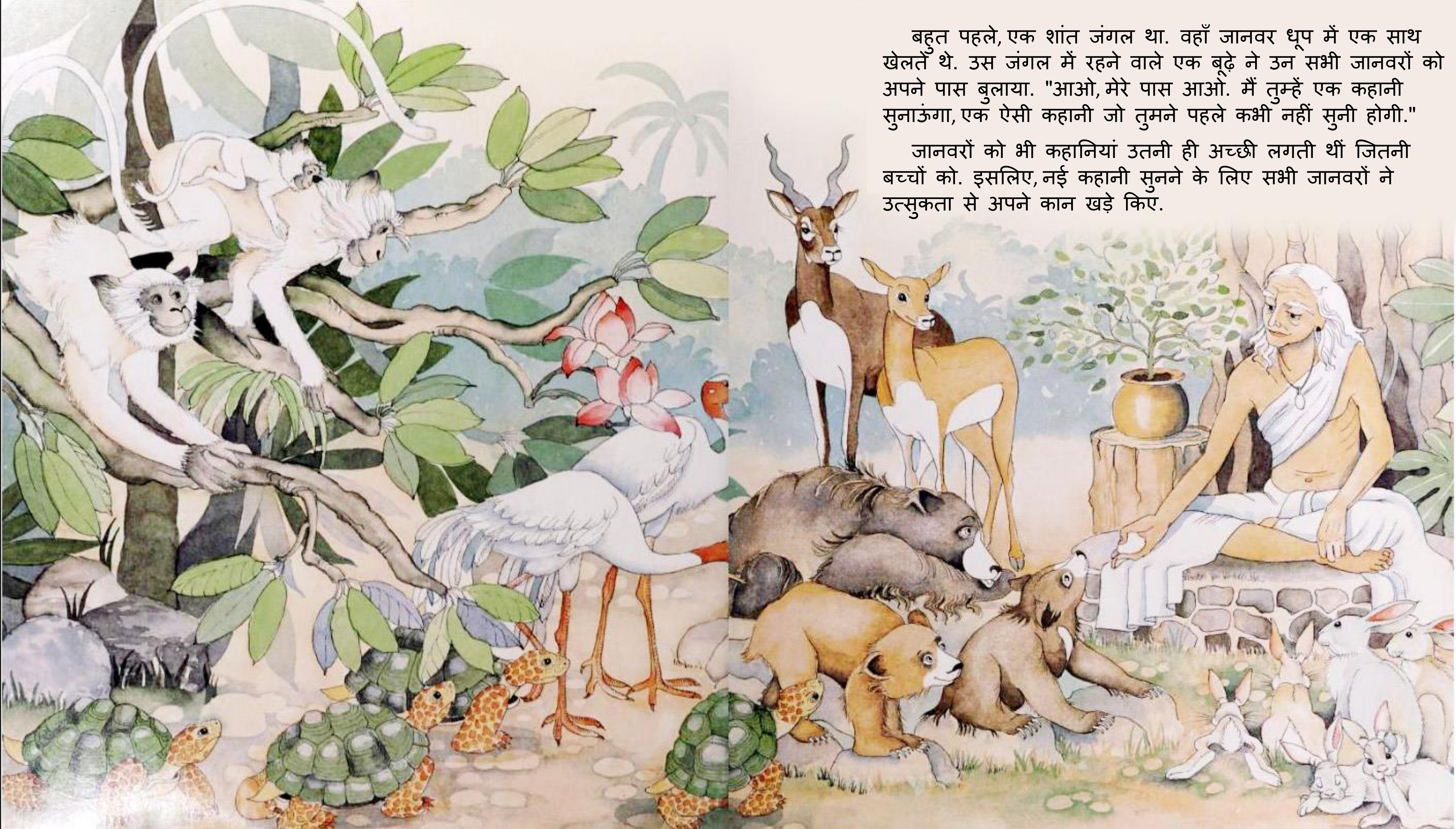

बहुत पहले, एक शांत जंगल था. वहाँ जानवर धूप में एक साथ खेलते थे. उस जंगल में रहने वाले एक बूढ़े ने उन सभी जानवरों को अपने पास बुलाया. "आओ, मेरे पास आओ. मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊंगा, एक ऐसी कहानी जो तुमने पहले कभी नहीं सुनी होगी."

जानवरों को भी कहानियां उतनी ही अच्छी लगती थीं जितनी बच्चों को. इसलिए, नई कहानी सुनने के लिए सभी जानवरों ने उत्सुकता से अपने कान खड़े किए.

"कुछ समय पहले इसी जंगल में एक शिकारी रहता था," बूढ़े ने कहानी शुरू की. "वो शिकारी ने सिर्फ अपने खाने के लिए ही जानवरों को नहीं मारता था. उसे जानवरों को मारने में बहुत मज़ा आता था."

फिर जानवरों ने एक लम्बी सांस ली और वे एक-दूसरे के करीब आ गए.

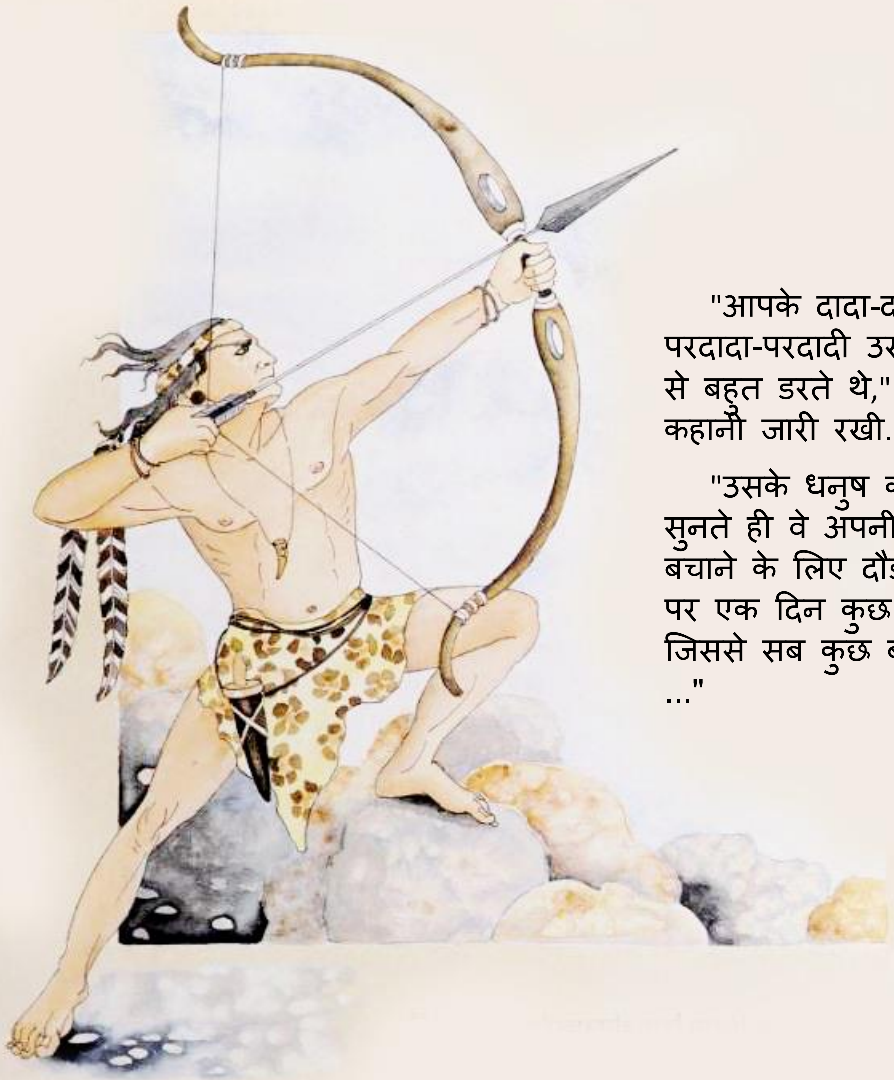

"आपके दादा-दादी और परदादा-परदादी उस शिकारी से बहुत डरते थे," बूढ़े ने कहानी जारी रखी.

"उसके धनुष की आवाज़ सुनते ही वे अपनी जान बचाने के लिए दौड़ते थे. पर एक दिन कुछ ऐसा हुआ जिससे सब कुछ बदल गया. ..."

एक साधु - नारद नाम के एक मुनि, इस जंगल में से गुज़र रहे थे. वो गा रहे थे और अपनी वीणा बजा रहे थे.

जंगल के पशु-पक्षी, नारद मुनि के पीछे-पीछे नाचते और गुनगुनाते हुए चल रहे थे.

फिर नारद ने किसी के दर्द से कराहने की आवाज सुनी. उन्होंने गाना बंद कर दिया. वो उस आवाज की ओर दौड़े और जल्द ही उन्होंने एक शिकारी का तीर लगे एक हिरन के बच्चे को पाया. नारद उसे सांत्वना देने के लिए घुटने टेककर बैठ गए और उन्होंने पूछा, "क्या तुम जानते हो, मेरे बच्चे, तुम्हारे साथ यह किसने किया है?"

"मुनि, कृपया मेरी मदद करें," हिरन के बच्चे ने कहा. "वो एक शिकारी था. अब मैं अपनी माँ के पास दौड़कर नहीं जा सकता हूँ. माँ ने मुझे सावधान रहने, छिपने की चेतावनी दी थी. लेकिन मैं नई घास खाना चाहता था. जब मुझे तीर लगा तो मैं माँ के लिए कुछ फूल इकट्ठा कर रहा था." हिरन के बच्चे ने फुसफुसाते हुए कहा, "इससे पहले वो मेरी मां को मारे कृपया उस शिकारी को रोकें."

ऊपर उड़ते पक्षियों के एक झुंड ने हिरन के बच्चे की रखवाली की, और उनका एक दूत उसकी माँ को लाने गया.

"मुनि, वे उसकी देखभाल करेंगे," उनके नेता, चकोर ने कहा. "कुछ और जानवर भी हैं जिन्हें आपकी ज़रूरत है. कृपा आप मेरे साथ आएं?"

चकोर, नारद को एक बड़े सूअर के पास ले गया, जो अपने पेट में लगे तीर से दर्द में कराह रहा था.

नारद को देखकर सूअर ने सम्मान में अपना सिर हिलाया, फिर कहा, "मुझे नहीं पता कि क्या आप मेरी क्या मदद कर पाएंगे. कृपया इस शिकारी को किसी और जानवर को मारने से रोकें. मेरे पांच छोटे बच्चे हैं. मेरी पत्नी उन्हें भला कैसे सुरक्षित रखेगी? जब तक वो शिकारी जिंदा है, तब तक सभी जीव खतरे में हैं."

जब नारद ने मुड़कर देखा तो पाँच आंसुओं से भरी आँखें उन्हें घूर रही थीं.

"मैं उस शिकारी को ढूंढूंगा," नारद मुनि ने सूअर से कहा, "और मैं तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की मदद करने के लिए वापस आऊंगा."

फिर नारद, चकोर का पीछा करते हुए जंगल के एक दूसरे हिस्से में गए जहां पेड़ों में से सूरज चमक रहा था. वहाँ पर एक घायल खरगोश पड़ा था.

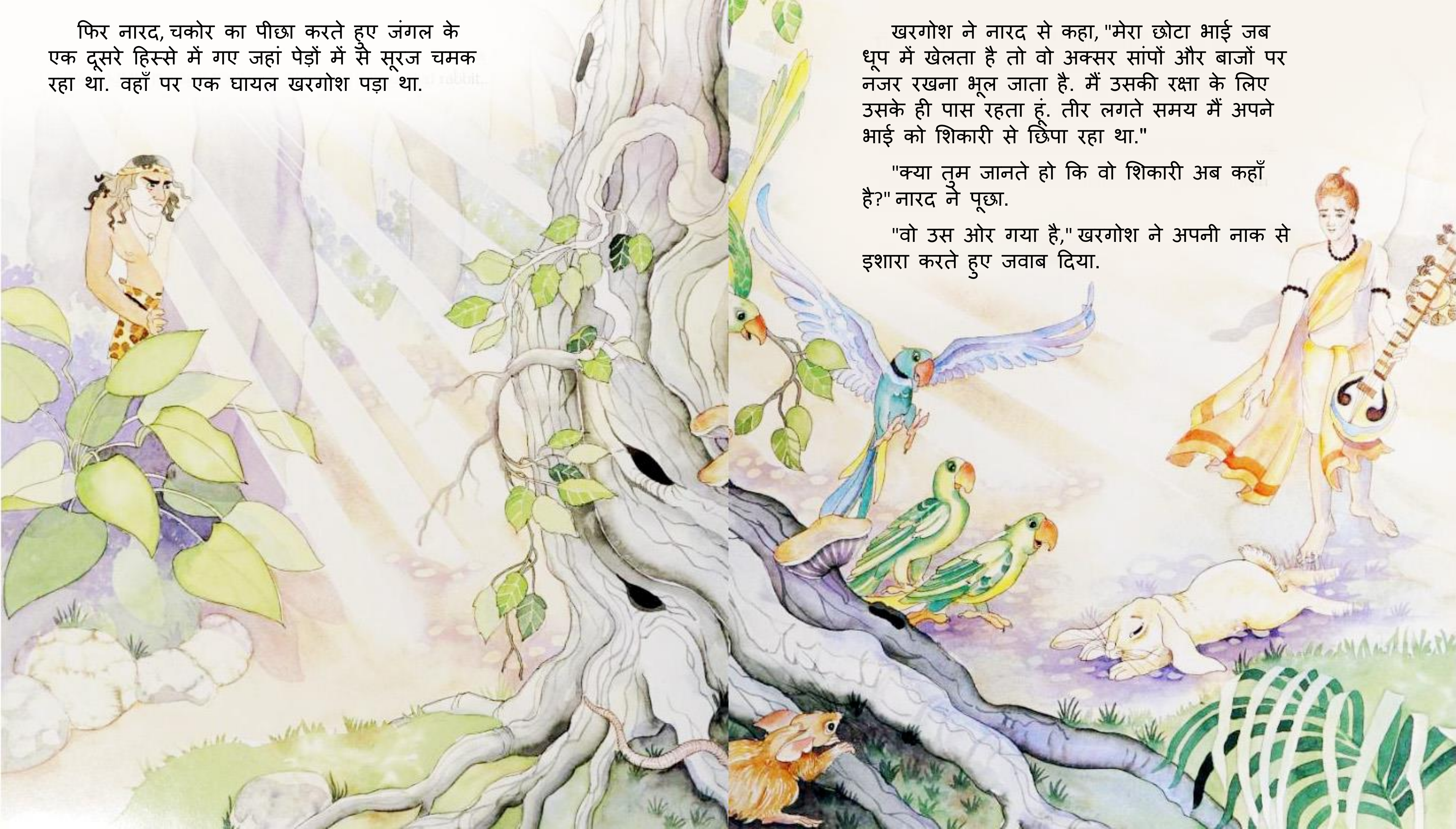

खरगोश ने नारद से कहा, "मेरा छोटा भाई जब धूप में खेलता है तो वो अक्सर सांपों और बाजों पर नजर रखना भूल जाता है. मैं उसकी रक्षा के लिए उसके ही पास रहता हूं. तीर लगते समय मैं अपने भाई को शिकारी से छिपा रहा था."

"क्या तुम जानते हो कि वो शिकारी अब कहाँ है?" नारद ने पूछा.

"वो उस ओर गया है," खरगोश ने अपनी नाक से इशारा करते हुए जवाब दिया.

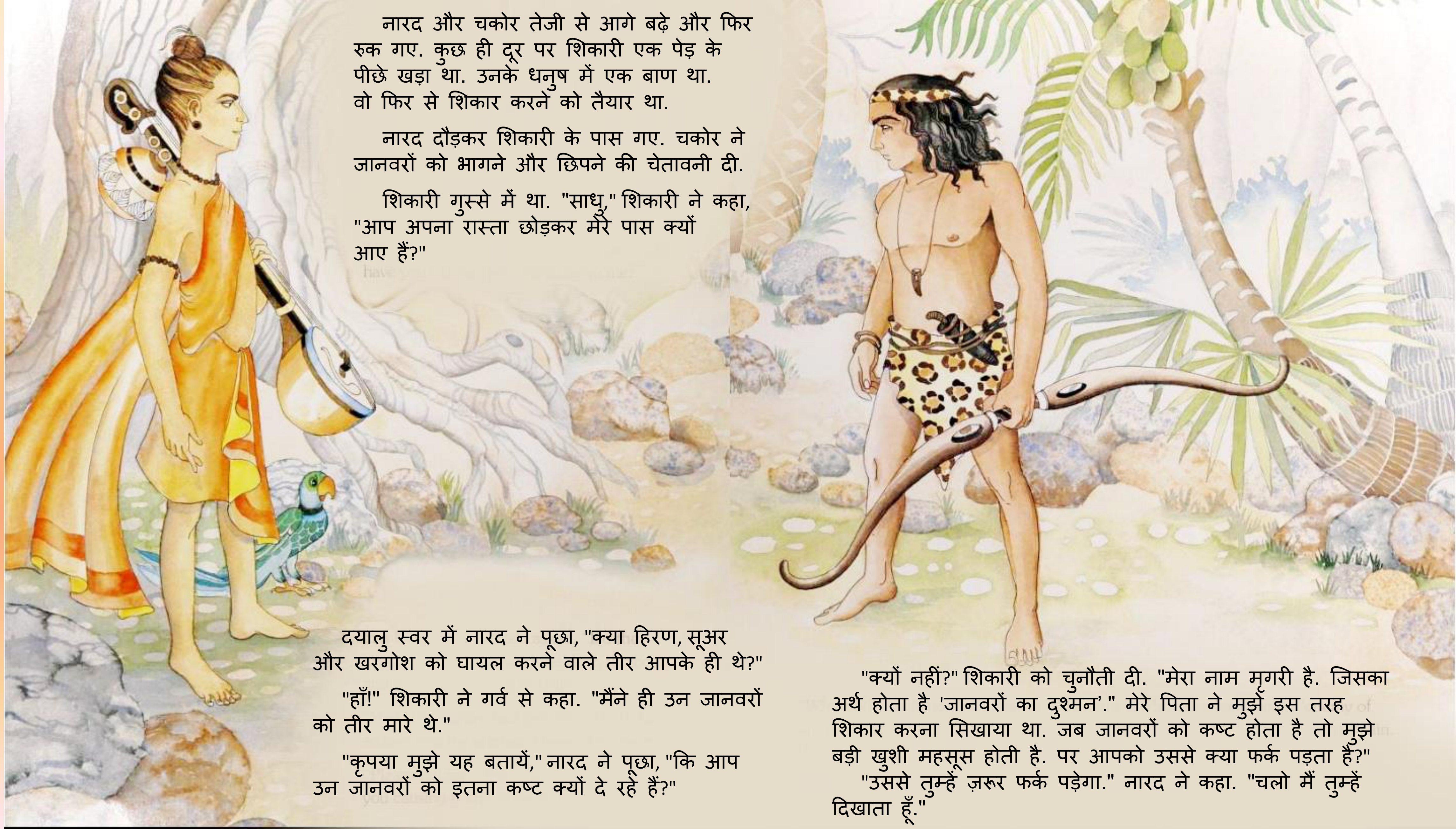

नारद और चकोर तेजी से आगे बढ़े और फिर रुक गए. कुछ ही दूर पर शिकारी एक पेड़ के पीछे खड़ा था. उनके धनुष में एक बाण था. वो फिर से शिकार करने को तैयार था.

नारद दौड़कर शिकारी के पास गए. चकोर ने जानवरों को भागने और छिपने की चेतावनी दी.

शिकारी गुस्से में था. "साधु," शिकारी ने कहा, "आप अपना रास्ता छोड़कर मेरे पास क्यों आए हैं?"

दयालु स्वर में नारद ने पूछा, "क्या हिरण, सूअर और खरगोश को घायल करने वाले तीर आपके ही थे?"

"हाँ!" शिकारी ने गर्व से कहा. "मैंने ही उन जानवरों को तीर मारे थे."

"कृपया मुझे यह बतायें," नारद ने पूछा, "कि आप उन जानवरों को इतना कष्ट क्यों दे रहे हैं?"

"क्यों नहीं?" शिकारी को चुनौती दी. "मेरा नाम मृगरी है. जिसका अर्थ होता है 'जानवरों का दुश्मन'." मेरे पिता ने मुझे इस तरह शिकार करना सिखाया था. जब जानवरों को कष्ट होता है तो मुझे बड़ी खुशी महसूस होती है. पर आपको उससे क्या फर्क पड़ता है?"

"उससे तुम्हें ज़रूर फर्क पड़ेगा." नारद ने कहा. "चलो मैं तुम्हें दिखाता हूँ."

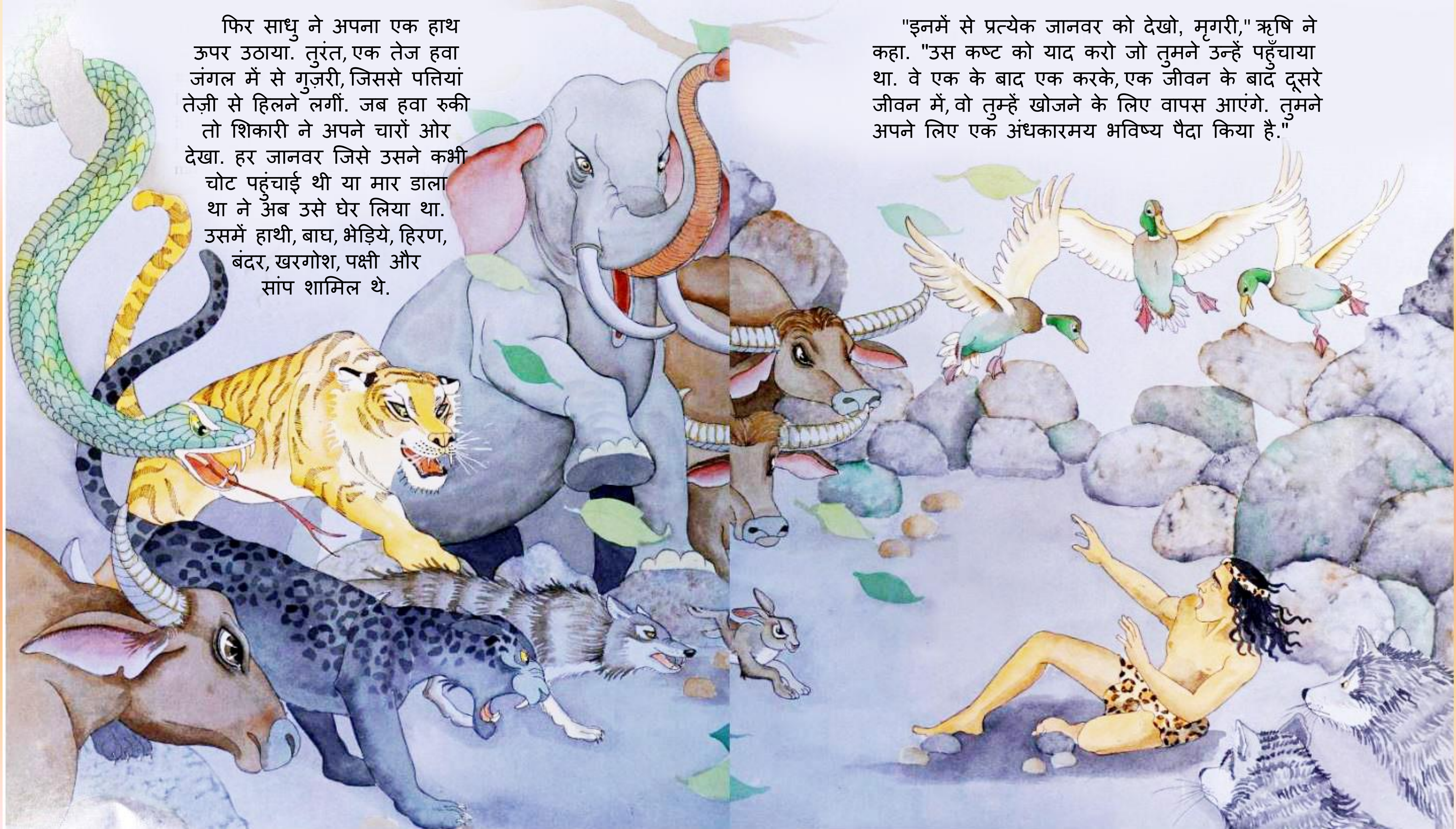

फिर साधु ने अपना एक हाथ ऊपर उठाया. तुरंत, एक तेज हवा जंगल में से गुज़री, जिससे पत्तियां तेज़ी से हिलने लगीं. जब हवा रुकी तो शिकारी ने अपने चारों ओर देखा. हर जानवर जिसे उसने कभी चोट पहुंचाई थी या मार डाला था ने अब उसे घेर लिया था. उसमें हाथी, बाघ, भेड़िये, हिरण, बंदर, खरगोश, पक्षी और सांप शामिल थे.

"इनमें से प्रत्येक जानवर को देखो, मृगरी," ऋषि ने कहा. "उस कष्ट को याद करो जो तुमने उन्हें पहुँचाया था. वे एक के बाद एक करके, एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में, वो तुम्हें खोजने के लिए वापस आएंगे. तुमने अपने लिए एक अंधकारमय भविष्य पैदा किया है."

अब दृश्य बदल गया. अब शिकारियों ने मृगरी का पीछा किया और उसे बाणों से मारा. पहले मृगरी एक बाघ था, फिर एक सूअर, फिर एक हिरण. उसे बार-बार शिकार बनने का डर और बाणों के कष्ट का अनुभव हुआ.

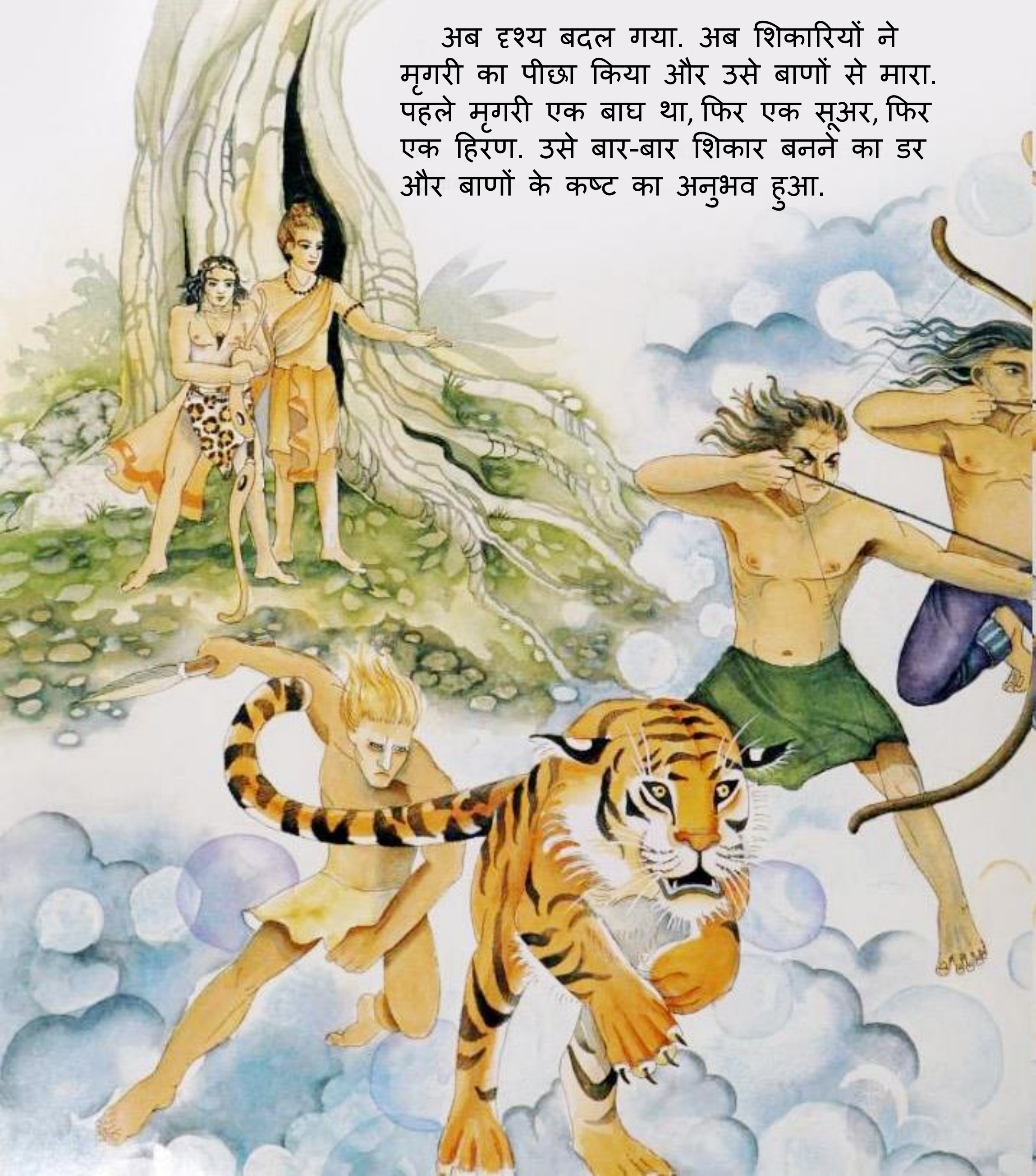

धीरे-धीरे मृगरी के अंदर कुछ बदलने लगा.

"आज आपने जिस हिरण को तीर मारा है वो अभी भी एक बच्चा है." नारद ने शिकारी को याद दिलाया.

"बच्चा हिरन अपनी माँ के लिए नई घास और फूल इकट्ठा कर रहा था, जब तुम्हारा तीर उसे लगा."

"जिस सूअर को तुमने तीर मारा उसके पाँच छोटे-छोटे बच्चे हैं."

"खरगोश अपने भाई की देखभाल कर रहा था जब तुमने उसे तीर मारा."

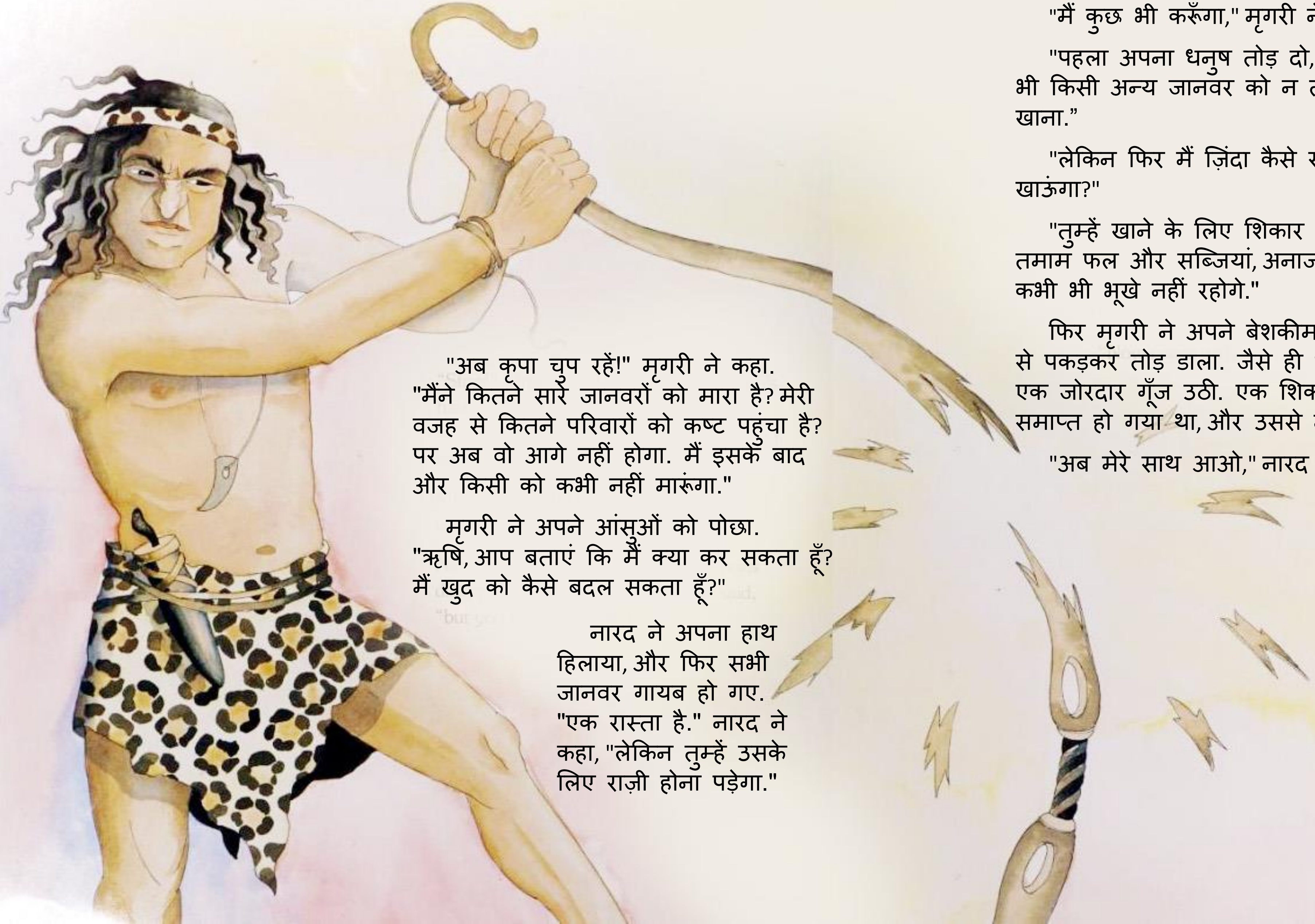

"अब कृपा चुप रहें!" मृगरी ने कहा. "मैंने कितने सारे जानवरों को मारा है? मेरी वजह से कितने परिवारों को कष्ट पहुंचा है? पर अब वो आगे नहीं होगा. मैं इसके बाद और किसी को कभी नहीं मारूंगा."

मृगरी ने अपने आंसुओं को पोछा. "ऋषि, आप बताएं कि मैं क्या कर सकता हूँ? मैं खुद को कैसे बदल सकता हूँ?"

नारद ने अपना हाथ हिलाया, और फिर सभी जानवर गायब हो गए. "एक रास्ता है." नारद ने कहा, "लेकिन तुम्हें उसके लिए राज़ी होना पड़ेगा."

"मैं कुछ भी करूँगा," मृगरी ने वादा किया.

"पहला अपना धनुष तोड़ दो," नारद ने कहा. "आज से, कभी भी किसी अन्य जानवर को न तो नुकसान पहुंचाना और न ही खाना."

"लेकिन फिर मैं ज़िंदा कैसे रहूंगा?" मृगरी से पूछा. "मैं क्या खाऊंगा?"

"तुम्हें खाने के लिए शिकार करने की ज़रूरत नहीं है. पृथ्वी तमाम फल और सब्जियां, अनाज और फलियां पैदा करती है. तुम कभी भी भूखे नहीं रहोगे."

फिर मृगरी ने अपने बेशकीमती धनुष के दोनों सिरों को हाथों से पकड़कर तोड़ डाला. जैसे ही धनुष दो टुकड़ों में टूटा जंगल में एक जोरदार गूँज उठी. एक शिकारी के रूप में उसका जीवन समाप्त हो गया था, और उससे मृगरी ने एक राहत की सांस ली.

"अब मेरे साथ आओ," नारद ने कहा.

जब वे खरगोश के पास पहुंचे तो खरगोश का बड़ा परिवार उसके पास इकठ्ठा था. नारद ने घुटने टेके और धीरे से तीर हटाया. मृगरी ने बड़े आश्चर्य से खरगोश का घाव गायब होते हुए देखा. उसके बाद खरगोश हवा में ऊँचा कूदा.

"धन्यवाद, साधु," खरगोश के परिवार ने कहा.

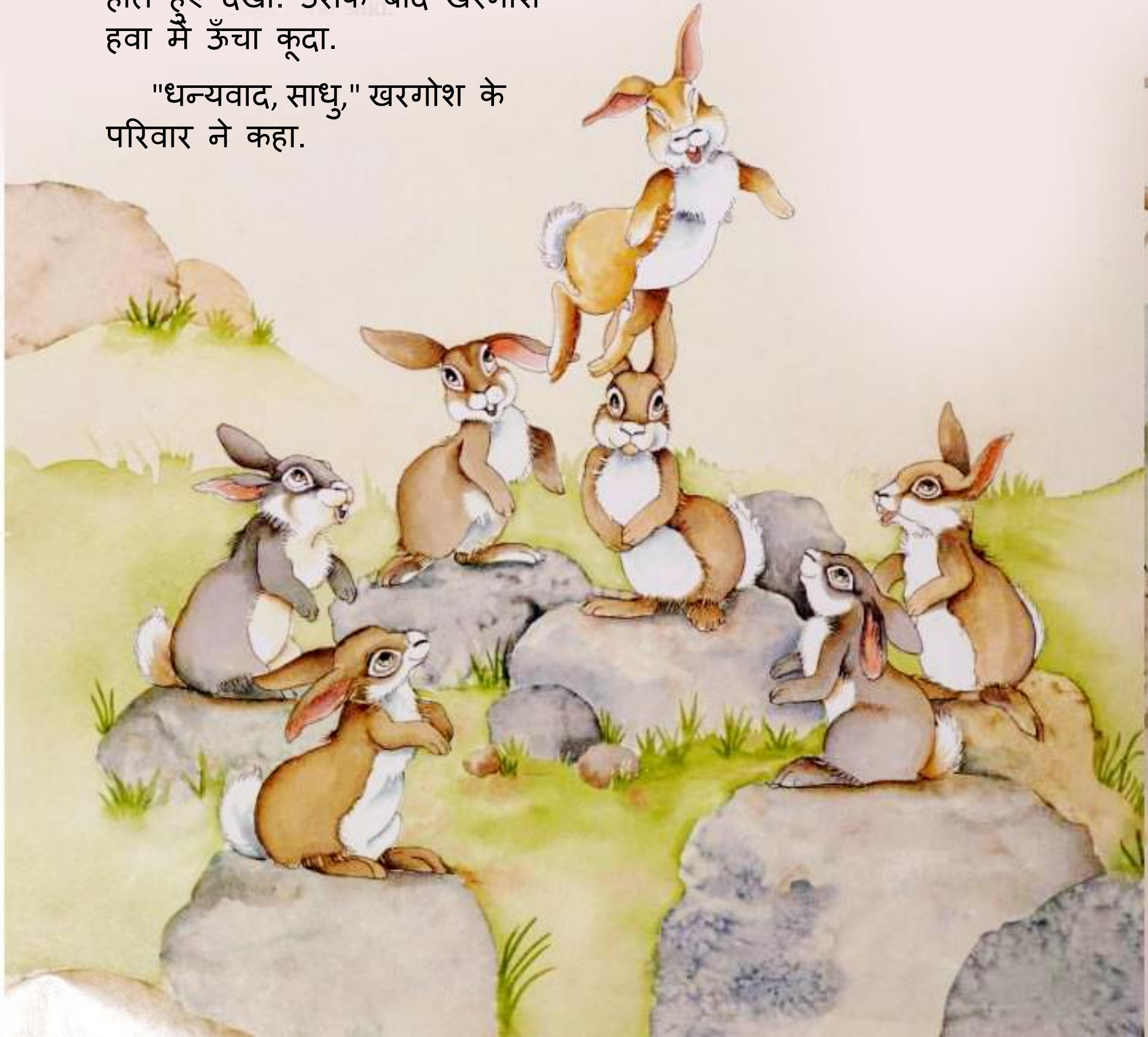

जब वे उस सूअर के पास पहुंचे, तो उन्होंने उसके बच्चों और पत्नी को उसके पास पाया. रोते-रोते उनकी आंखें लाल हो गईं थीं. ऋषि ने फिर से तीर हटाया, और उससे सूअर का ज़ख्म तुरंत ठीक हो गया.

उनके दुख के आंसू अब खुशी के आंसू में बदल गए. उससे मृगरी को भी अंदर से खुशी महसूस हुई.

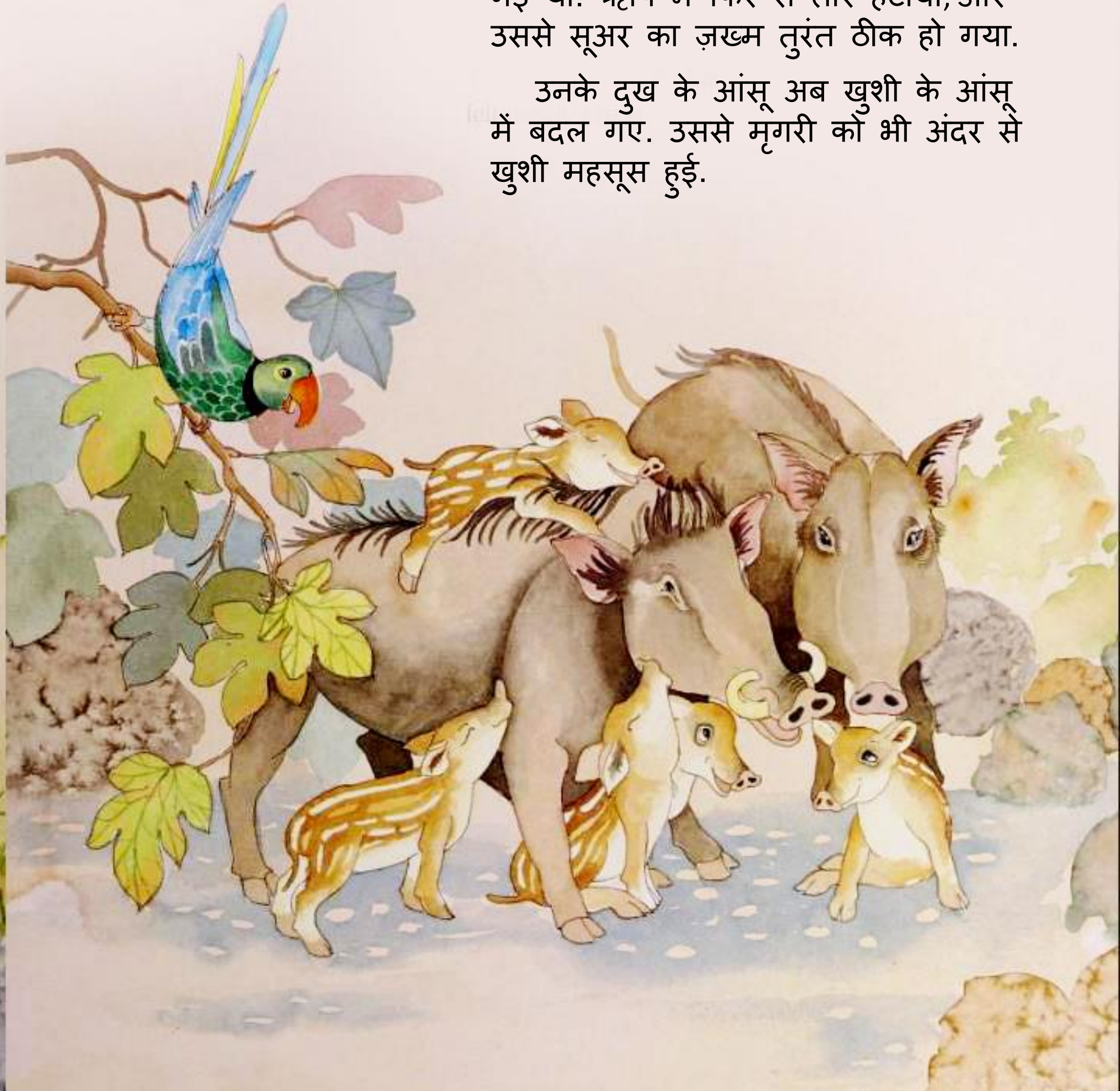

नारद और मृगरी ने तब सुंदर गायन सुना जब वे हिरन के बच्चे के पास पहुंचे. हिरन का बच्चा वहां लेटा था और पक्षी उसके और उसकी माँ के लिए गा रहे थे. उन्हें देख मृगरी रोने लगा.

उसने पूछा, "ऋषि, क्या आप अब भी उसे बचा सकते हैं?"

फिर नारद ने दिलासा देने के लिए अपने हाथ हिरन के बच्चे पर रखा. नारद ने उसके कान में कुछ उत्साहजनक शब्द फुसफुसाए. कुछ मिनटों के बाद, नारद ने धीरे से तीर हटा दिया. कुछ ही पलों में हिरन के बच्चे का घाव भर गया और वो जाग गया.

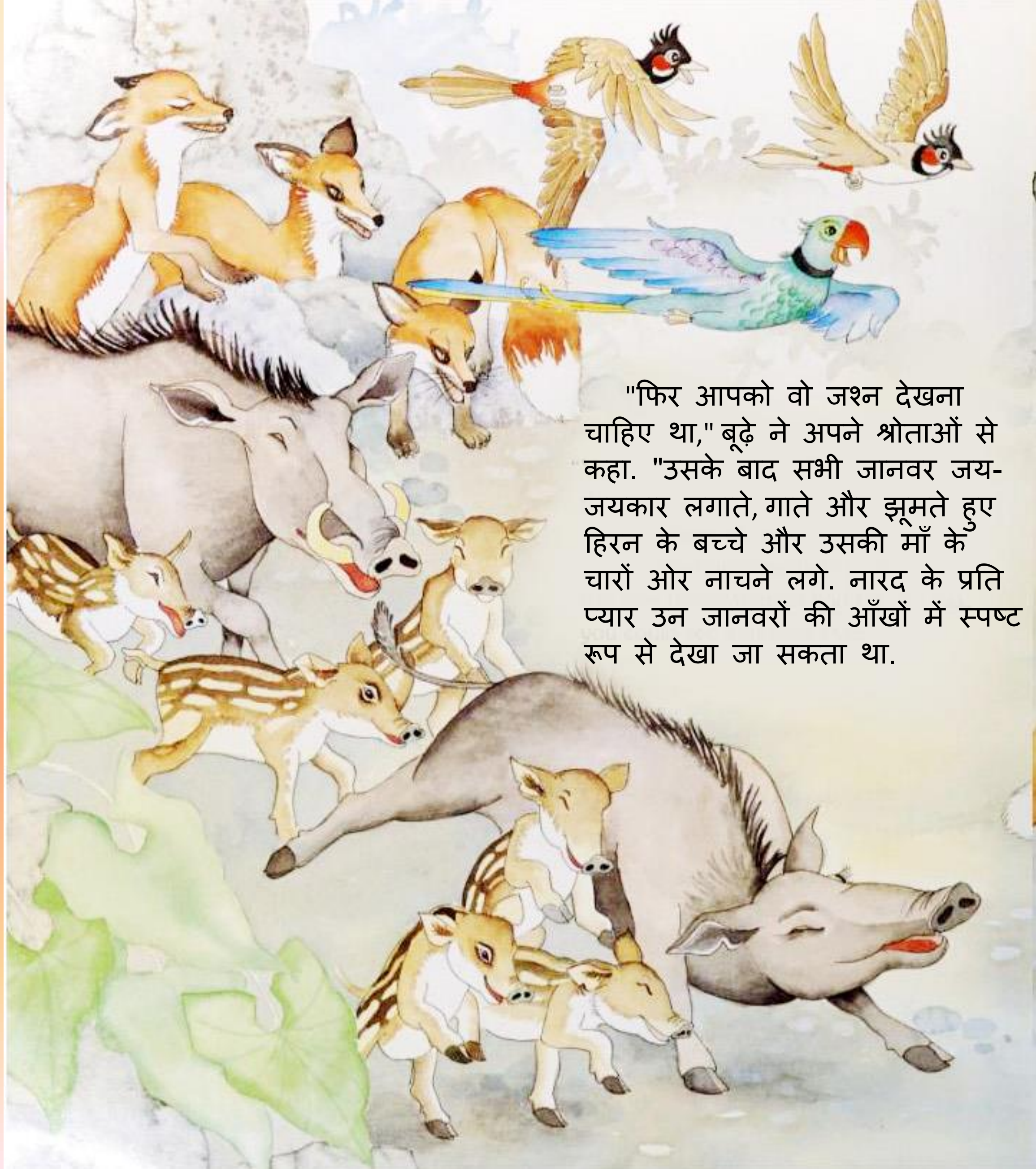

"फिर आपको वो जश्न देखना चाहिए था," बूढ़े ने अपने श्रोताओं से कहा. "उसके बाद सभी जानवर जय-जयकार लगाते, गाते और झूमते हुए हिरन के बच्चे और उसकी माँ के चारों ओर नाचने लगे. नारद के प्रति प्यार उन जानवरों की आँखों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था.

"फिर मृगरी ने सोचा कि जानवरों का दुश्मन बनने के बजाय उनका दोस्त बनना कैसा होगा?

"मुझे यह पता है, क्योंकि मैं ही वो शिकारी था."

बूढ़े ने अपना सिर नीचे कर लिया. तभी एक आंसू उसके गाल पर गिरा.

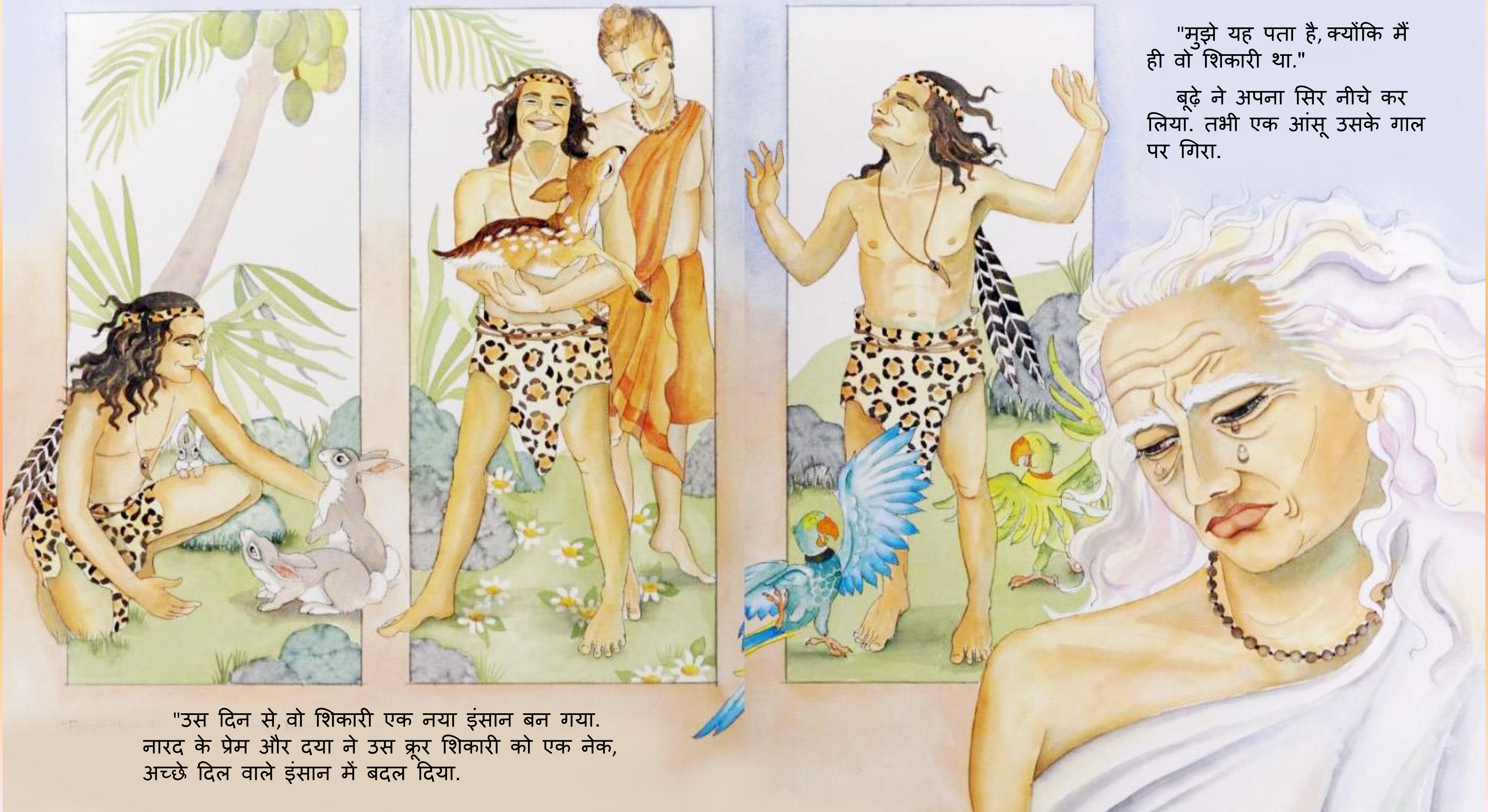

"उस दिन से, वो शिकारी एक नया इंसान बन गया. नारद के प्रेम और दया ने उस क्रूर शिकारी को एक नेक, अच्छे दिल वाले इंसान में बदल दिया.

तब तक सभी जानवर उस दयालु बूढ़े व्यक्ति को केवल एक कथाकार के रूप में जानते थे, जो उनके साथ अपना भोजन साझा करता था, जो उनके बच्चों के साथ खेलता था, और उनके घावों पर मलहम लगाता था. जब उन्होंने बूढ़े के आँसुओं को देखा तो वे उसे सांत्वना देने के लिए इकट्ठे हुए.

हिरन पहले बोला, "हमारे साथ अपनी कहानी साझा करने के लिए धन्यवाद. हम उसे हमेशा याद रखेंगे." दूसरों ने सहमति में अपना सिर हिलाया.

फिर उनमें से सबसे छोटा एक युवा खरगोश, बूढ़े आदमी की गोद में कूद गया. बाकी जानवर उसे देखकर हंस पड़े. "मुझे आपकी कहानी पसंद आई," खरगोश ने कहा. "आपकी कहानी मुझे आशा देती है."

"ओह?" बूढ़े ने मुस्कुराते हुए पूछा. "तुम्हें यह कहानी क्या आशा देती है?"
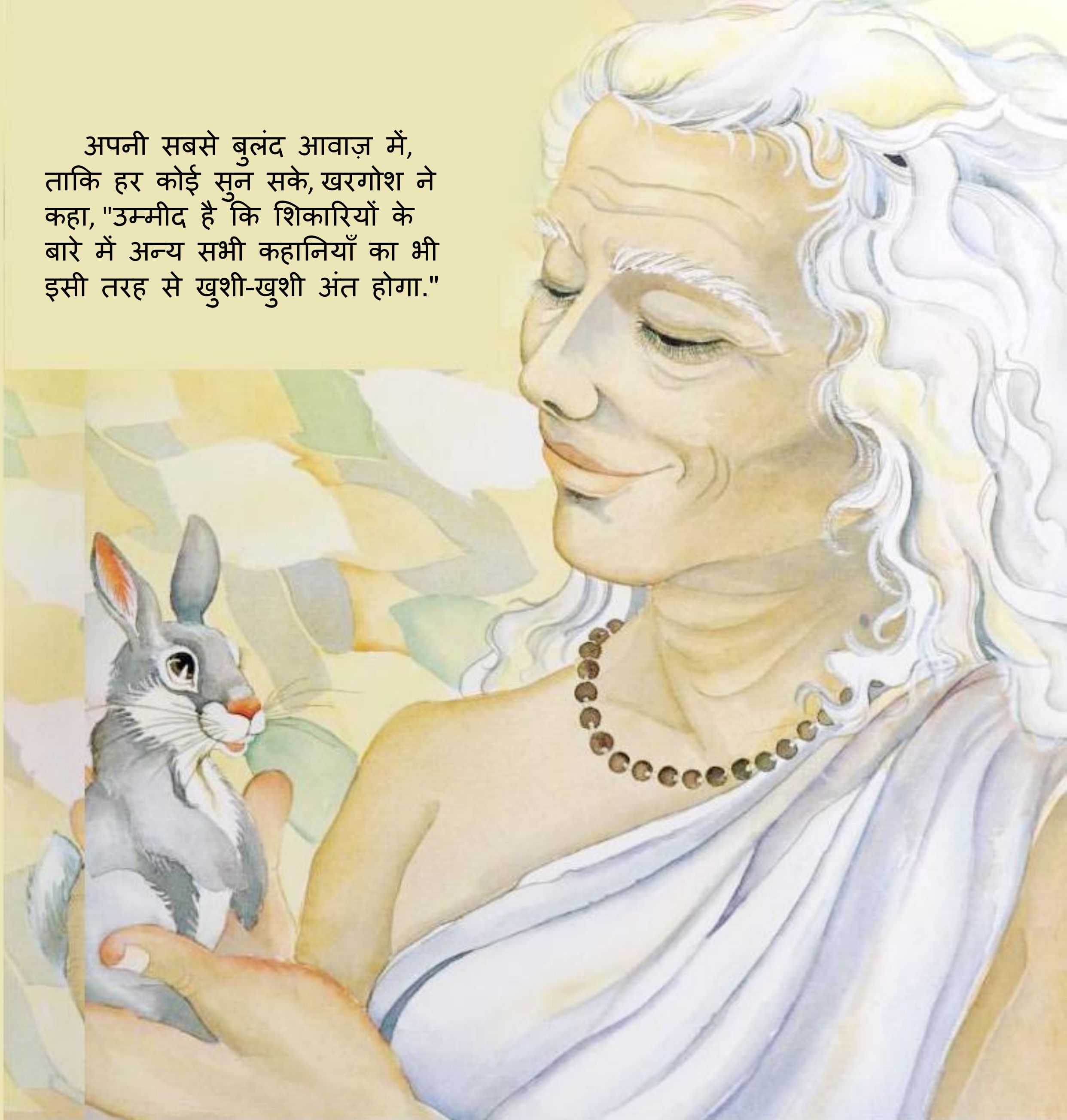
अपनी सबसे बुलंद आवाज़ में, ताकि हर कोई सुन सके, खरगोश ने कहा, "उम्मीद है कि शिकारियों के बारे में अन्य सभी कहानियाँ का भी इसी तरह से खुशी-खुशी अंत होगा."